# दयालु और परोपकारी बालक-बालिकाएँ

मूल्य पचहत्तर पैसे

गीताप्रेस, गोरखपुर

श्रीहरिः

# निवेदन

'कल्याण'के 'बालक-अङ्क'में प्रकाशित २३ दयालु और परोपकारी बालक-बालिकाओंके छोटे-छोटे सचित्र चरित्र बालक-बालिकाओंके लिये ही इस पुस्तिकामें प्रकाशित किये गये हैं। ये चरित्र जिन-जिन ग्रन्थोंके आधारपर लिये गये हैं, उन-उनके लेखकोंके हम हृदयसे कृतज्ञ हैं।

हनुमानप्रसाद पोद्दार

* श्रीहरिः *



# विषय-सूची

॥ श्रीहरिः ॥

# दयालु और परोपकारी बालक-बालिकाएँ

## शतमन्यु

सत्ययुगकी बात है। एक बार देशमें दुर्भिक्ष पड़ा। वर्षाके अभावसे अन्न नहीं हुआ। पशुओंके लिये चारा नहीं रहा। दूसरे वर्ष भी वर्षा नहीं हुई। विपत्ति बढ़ती गयी। नदी-तालाब सूख चले। मार्तण्डकी प्रचण्ड किरणोंसे धरती रसहीन हो गयी। तृण भस्म हो गये। वृक्ष निष्प्राण हो चले। मनुष्यों और पशुओंमें हाहाकार मच गया।

दुर्भिक्ष बढ़ता गया। एक वर्ष नहीं, दो वर्ष नहीं, पूरे बारह वर्षोंतक अनावृष्टि रही। लोग त्राहि-त्राहि करने लगे। कहीं अन्न नहीं, जल नहीं, तृण नहीं, वर्षा और शीत ऋतुएँ नहीं। सर्वत्र सर्वदा एक ही ग्रीष्मऋतु। धरतीसे उड़ती धूल और अग्निमें सनी तेज लू। आकाशमें पंख पसारे दल-के-दल उड़ते पक्षियोंके दर्शन दुर्लभ हो गये। पशु-पक्षी ही नहीं, कितने मनुष्य कालके गालमें गये, कोई संख्या

नहीं । मातृ-स्तनोंमें दूध न पाकर कितने सुकुमार शिशु मृत्युकी गोदमें सो गये, कौन जाने ! नर-कंकालको देखकर करुणा भी करुणासे भींग जाती, किंतु एक मुट्ठी अन्न किसीको कोई कहाँसे देता । नरेशका अक्षय कोष और धनपतियोंके धन अन्नकी व्यवस्था कैसे करते ? परिस्थिति उत्तरोत्तर बिगड़ती ही चली गयी । प्राणोंके लाले पड़ गये ।

किसीने बतलाया कि नरमेध किया जाय तो वर्षा हो सकती है । लोगोंको बात तो जँची; पर प्राण सबको प्यारे हैं । बलात् किसीकी बलि दी नहीं जा सकती ।

विशाल जन-समाज एकत्र हुआ था, पर सभी चुपचाप थे । सबके सिर झुके थे । अचानक नीरवता भङ्ग हुई । सबने दृष्टि उठायी, देखा बारह वर्षका अत्यन्त सुन्दर बालक खड़ा है । उसके अङ्ग-अङ्गसे कोमलता जैसे चू रही थी । उसने कहा, 'उपस्थित महानुभावो ! असंख्य प्राणियोंकी रक्षा एवं देशको संकटकी स्थितिसे छुटकारा दिलानेके लिये मेरे प्राण सहर्ष प्रस्तुत हैं । यह प्राण देशके हैं और देशके लिये अर्पित हों, इससे अधिक सदुपयोग इनका और क्या होगा ? इसी बहाने विश्वात्मा प्रभुकी सेवा इस नश्वर कायासे हो जायगी ।'

'बेटा शतमन्यु ! तू धन्य है । चिल्लाते हुए एक व्यक्तिने दौड़कर उसे अपने हृदयसे कस लिया । वे उसके पिता थे । 'तूने अपने पूर्वजोंको अमर कर दिया ।' शतमन्युकी

जननी भी वहीं थीं। समीप आ गयीं। उनकी आँखें झर रही थीं। उन्होंने शतमन्युको अपनी छातीसे इस प्रकार चिपका लिया, जैसे कभी नहीं छोड़ सकेंगी।

नियत समयपर समारोहके साथ यज्ञ प्रारम्भ हुआ। शतमन्युको अनेक तीर्थोंके जलसे स्नान कराकर नवीन वस्त्राभूषण पहनाये गये। सुगन्धित चन्दन लगाया गया। पुष्प-मालाओंसे अलंकृत किया गया।

बालक यज्ञ-मण्डपमें आया। यज्ञ-स्तम्भके समीप खड़ा होकर वह देवराज इन्द्रका स्मरण करने लगा। यज्ञ-मण्डप शान्त एवं नीरव था। बालक सिर झुकाये बलिके लिये तैयार था; एकत्रित जन-समुदाय मौन होकर उधर एकटक देख रहा था, उसी क्षण शून्यमें विचित्र बाजे बज उठे। शतमन्युपर पारिजात-पुष्पोंकी वृष्टि होने लगी। सहसा मेघध्वनिके साथ वज्रधर सुरेन्द्र प्रकट हो गये। सब लोग आँख फाड़े आश्चर्यके साथ देख-सुन रहे थे। शतमन्युके मस्तक-पर अत्यन्त प्यारसे अपना वरद हस्त फेरते हुए सुरपति बोले— 'वत्स! तेरी भक्ति और देशकी कल्याण-भावनासे मैं संतुष्ट हूँ। जिस देशके बालक देशकी रक्षाके लिये प्राण अर्पण करनेको प्रतिक्षण प्रस्तुत रहते हैं, उस देशका कभी पतन नहीं हो सकता। तेरे त्यागसे संतुष्ट होकर मैं बलिके बिना ही यज्ञ-फल प्रदान कर दूँगा। देवेन्द्र अन्तर्धान हो गये।

दूसरे दिन इतनी वृष्टि हुई कि धरतीपर जल-ही-जल

दीखने लगा। सर्वत्र अन्न-जल, फल-फूलका प्राचुर्य हो गया। एक देश-प्राण शतमन्युके त्याग, तप एवं कल्याणकी भावनाने सर्वत्र पवित्र आनन्दकी सरिता बहा दी।

# सिद्धार्थकुमार

बुद्ध भगवान्‌का बचपनका नाम सिद्धार्थकुमार है। महाराज शुद्धोदनने उनके लिये एक अलग बहुत बड़ा बगीचा लगवा दिया था। उसी बगीचेमें वे एक दिन टहल रहे थे। इतनेमें आकाशसे एक हंस पक्षी चीखता हुआ गिर पड़ा। राजकुमार सिद्धार्थने दौड़कर उस पक्षीको गोदमें उठा लिया। किसीने हंसको बाण मारा था। वह बाण अब भी हंसके शरीरमें चुभा था। कुमार सिद्धार्थने पक्षीके शरीरमेंसे बाण निकाला और यह देखनेके लिये कि शरीरमें बाण चुभे तो कैसा लगता है, उस बाणको अपने दाहिने हाथसे बायीं भुजामें चुभा लिया। बाण चुभते ही राजकुमारके नेत्रोंसे टप-टप आँसू गिरने लगे। उन्हें अपनी पीड़ाका ध्यान नहीं था, बेचारे पक्षीको कितनी पीड़ा हो रही होगी, यह सोचकर ही वे रो पड़े थे।

कुमार सिद्धार्थने हंसके घाव धोये, उसके घावपर पत्तियोंका रस निचोड़ा और उसे गोदमें लेकर प्यारसे सहलाने लगे। इतनेमें दूरसे कुमार देवदत्तका स्वर सुनायी पड़ा—'मेरा हंस यहाँ गिरा है क्या?'

राजकुमार देवदत्त सिद्धार्थकुमारके चचेरे भाई थे। वे बड़े कठोर स्वभावके थे। शिकार करनेमें उन्हें आनन्द आता था। हंसको उन्होंने ही बाण मारा था। सिद्धार्थकुमारकी गोदमें हंसको देखकर वे वहाँ दौड़े आये और बोले—'यह हंस तो मेरा है। मुझे दे दो।'

सिद्धार्थ बोले—'तुमने इसे पाला है ?'

देवदत्तने कहा—'मैंने इसे बाण मारा है। वह देखो मेरा बाण पड़ा है।'

कुमार सिद्धार्थ बोले—'तुमने इसे बाण मारा है ? बेचारे

निरपराध पक्षीको तुमने क्यों बाण मारा ? बाण चुभनेसे बड़ी पीड़ा होती है, यह मैंने अपनी भुजामें बाण चुभाकर देखा है, मैं हंस तुम्हें नहीं दूँगा; यह जब अच्छा हो जायगा, मैं इसे उड़ जानेके लिये छोड़ दूँगा।'

कुमार देवदत्त इतने सीधे नहीं थे। वे हंसके लिये झगड़ने लगे। बात महाराज शुद्धोदनके पास गयी। महाराजने दोनों राजकुमारोंकी बातें सुनीं। उन्होंने देवदत्तसे पूछा—'तुम हंसको मार सकते हो ?'

देवदत्तने कहा—'आप उसे मुझे दीजिये, मैं अभी उसे मार देता हूँ।'

महाराजने पूछा—'तुम फिर उसे जीवित भी कर दोगे ?'

देवदत्तने कहा—'मरा प्राणी कहीं फिर जीवित होता है ?'

महाराजने कहा—'शिकारका यह नियम ठीक है कि जो जिस पशु-पक्षीको मारे उसपर उसीका अधिकार होता है। यदि हंस मर गया होता तो उसपर तुम्हारा अधिकार होता; लेकिन मरते प्राणीको जो जीवन-दान दे, उसका उस प्राणीपर उससे अधिक अधिकार है, जिसने कि उसे मारा हो। सिद्धार्थने हंसको मरनेसे बचाया है। अतः हंस सिद्धार्थका है।'

कुमार सिद्धार्थ हंसको ले गये। जब हंसका घाव अच्छा हो गया, तब उसे उन्होंने उड़ा दिया।

# दयालु मूलराज

लगभग नौ सौ वर्ष पहलेकी बात है, राजा भीमदेव गुजरातमें राज्य करते थे। उनके एक लड़का था। नाम था मूलराज। लड़का होनहार था और था बड़ा दयालु। एक साल गुजरातमें बरसात नहीं हुई। खेत सूख गये। एक गाँवके लोग राजाको लगान नहीं दे सके। राजाके सिपाहियोंने गाँवमें जाकर उन लोगोंके घरोंमें जो कुछ था, सब जप्त करके ले लिया और उनको भी साथ लाकर हाजिर किया। राजकुमार मूलराज पास ही खेल रहा था। किसान बेचारे दुखी थे और आपसमें अपनी बुरी हालतकी चर्चा कर रहे थे। राजकुमारने उनकी सारी बातें सुनीं। उनका दुःख जानकर मूलराजकी आँखोंसे आँसू बहने लगे। मूलराजने उनका दुःख दूर करनेका निश्चय किया।

उन दिनों राजकुमार घुड़सवारीकी कला सीख रहा था। राजाने कहा था, 'तुम अच्छी तरह सीख लोगे, तब तुम्हें इनाम दिया जायगा।' मूलराजने अभ्यास करके घुड़सवारीकी कला सीख ली थी। आज पिताको अपनी कला दिखलायी। राजाने प्रसन्न होकर कहा—'बेटा! मैं बड़ा प्रसन्न हुआ हूँ, बोलो, क्या इनाम चाहते हो?' मूलराजने कहा—'पिताजी! इन बेचारे गरीबोंकी जप्त की हुई चीजें वापस लौटा दीजिये और इन्हें जानेकी आज्ञा दीजिये।'
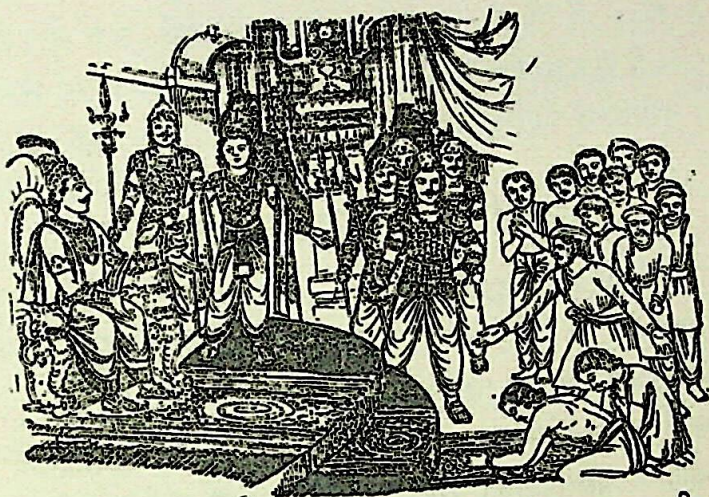
मूलराजकी बात सुनकर राजाको बड़ी प्रसन्नता हुई। उनकी आँखोंमें हर्षके आँसू छलक आये। फिर उन्होंने कहा—'बेटा! तूने अपने लिये तो कुछ नहीं माँगा, कुछ तो माँग।' इसपर मूलराज बोला—'पिताजी! आप प्रसन्न हैं तो मुझे यह दीजिये कि अब यदि किसी साल फसल न हो तो उस साल लगान वसूल ही न किया जाय, ऐसा नियम बना दें, इससे मेरी आत्माको बड़ा सुख होगा।'

राजाने ऐसा ही किया, किसानोंकी जप्त की हुई चीजें लौटा दीं और भविष्यके लिये फसल न होनेके दिनोंमें लगान न लेनेका नियम बना दिया। किसान बड़ी प्रसन्नतासे आशिष देते हुए अपने घरोंको लौट गये।

## इब्राहिम लिंकनकी दयालुता

एक दिन इब्राहिम लिंकन अपने मित्रोंके साथ शामको टहलकर घर लौट रहे थे। उन्होंने देखा कि सामनेसे एक घोड़ा आ रहा है। घोड़ेकी पीठपर जीन कसी थी, लेकिन कोई सवार उसपर नहीं था। घोड़ेको देखते ही इब्राहिमने कहा—'यह किसका घोड़ा है ? इसका सवार कहाँ गया ?'

*मित्रोंने कहा*—'किसी शराबीका होगा। वह कहीं नशेमें बेसुध पड़ा होगा।'

*इब्राहिम बोला*—'उसे ढूँढ़ना चाहिये।'

*मित्र झल्लाये*—'अँधेरा हो रहा है और तुम्हें एक शराबीको ढूँढ़नेकी पड़ी है ?'

लेकिन बचपनसे ही जिसे जो स्वभाव पड़ा हो, उसे वह छोड़ नहीं सकता। इब्राहिम बहुत छोटेपनसे अत्यन्त दयालु था। किसी व्यक्तिको संकटमें पड़े देखकर उससे सहायता किये बिना रहा नहीं जाता था। उसने कहा—'घोड़ेका सवार पता नहीं किस कष्टमें हो। वह शराबी भी हो तो क्या हुआ। हमें उसके शराबीपनसे क्या लेना-देना है।

हमें तो एक ऐसे मनुष्यकी सहायता करनी है, जिसे हमारी सहायताकी इस समय बहुत अधिक आवश्यकता है। मैं तो उसे ढूँढ़ने जाता हूँ। मनुष्यको मनुष्यकी सहायता करनी ही चाहिये।'

*मित्र बिगड़कर बोले*—'तुम अकेले ही बड़े मनुष्य हो। हमलोग-जैसे सब मनुष्य नहीं, पशु हैं। तुम अपनी मनुष्यता अपने पास रक्खो।'

मित्र अपने-अपने घर चले गये; किंतु इब्राहिम लिंकन अकेला ही घोड़ेके सवारको ढूँढ़ने चल पड़ा। सचमुच उसे रास्तेके किनारे बेहोश पड़ा एक शराबी ही मिला। वह इतनी शराब पिये था कि बहुत हिलाने-डुलानेपर भी होशमें नहीं आता था। इब्राहिम उसे उठाकर घर ले आया। किसी गरीब मजदूरका पंद्रह बरसका लड़का एक गंदे, दुर्गन्धित शराबीको घर लाद लाये तो घरके लोग उसपर बिगड़ेंगे नहीं? लेकिन इब्राहिमके लिये यह नयी बात नहीं थी। उसकी बहिन जब बिगड़ने लगी तो वह बोला—'बहिन! मुझपर बिगड़ो मत। यह भी मनुष्य है और इसकी सेवा करना हमारा कर्तव्य है।'

इब्राहिमने उस शराबीको नहलाया, उसके कपड़े बदले। होशमें आनेपर उसे भोजन दिया। सबेरा होनेपर वह शराबी वहाँसे अपने घर गया।

यही इब्राहिम लिंकन अपने सद्‌गुणोंके कारण आगे
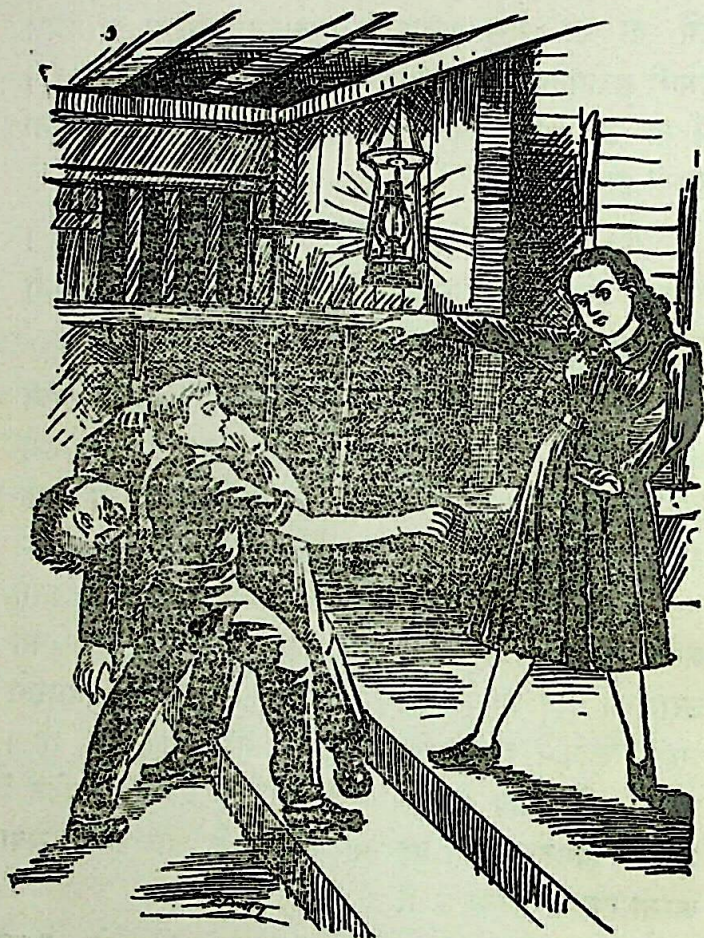
जाकर संयुक्तराज्य अमेरिकाका राष्ट्रपति हुआ। अब भी वहाँके लोग 'पिता लिंकन' कहकर उसका नाम बड़ी श्रद्धासे लेते हैं।

# अनाथ बालककी दयालुता

एक बड़े देशकी रानीको बच्चोंपर बड़ा प्रेम था। वह अनाथ बालकोंको अपने खर्चसे पालती-पोसती। उसने यह आदेश दे रखा था कि 'कोई भी अनाथ बालक मिले, उसे तुरंत मेरे पास पहुँचाया जाय।'

एक दिन सिपाहियोंको रास्तेमें एक छोटा बच्चा मिला। उन्होंने उसे लाकर रानीके हाथोंमें सौंप दिया। रानी सहज स्नेहसे उसे पालने लगी।

बच्चा जब पाँच वर्षका हो गया, तब उसे पढ़नेके लिये गुरुजीके यहाँ भेजा। वह मन लगाकर पढ़ने लगा। बालक था बड़ा सुन्दर और साथ ही अच्छे गुणोंवाला और बुद्धिमान् भी। इससे रानीकी ममता उसपर बढ़ने लगी और वह उसे अपने पेटके बच्चेकी तरह प्यार करने लगी। बच्चा भी उसे अपनी सगी माँके समान ही समझता था।

एक दिन वह जब पाठशालासे लौटा, तब बहुत उदास

था । रानीने उसे अपनी गोदमें बैठा लिया और प्यारसे गालोंपर हाथ फेरकर उदासीका कारण पूछा । बच्चा रो
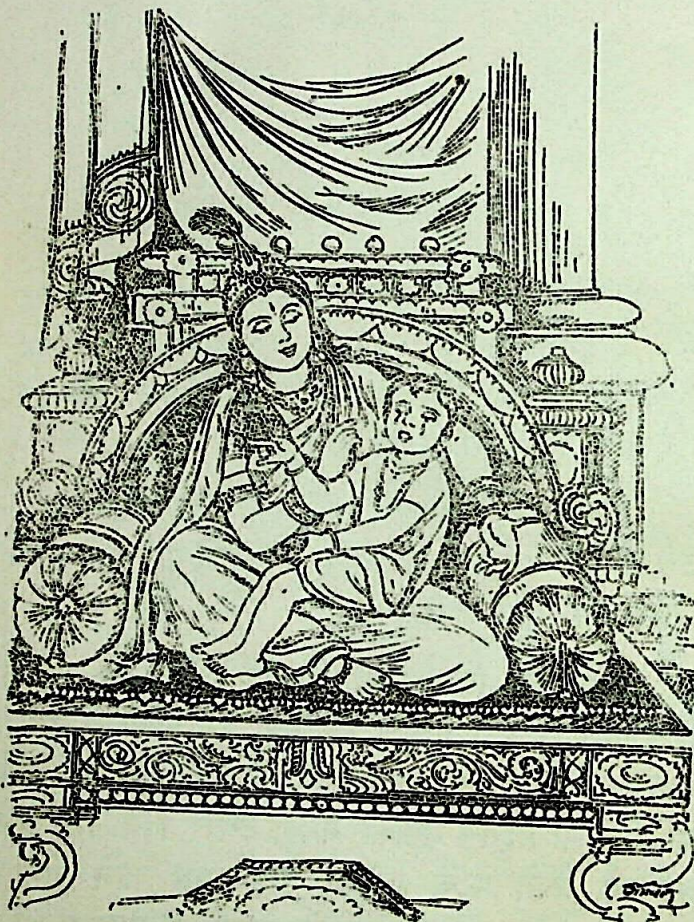
पड़ा । रानीने अपने आँचलसे उसके आँसू पोंछकर और मुँह चूमकर बड़े स्नेहसे कहा—'बेटा ! तू रो क्यों रहा है ?'

बच्चेने कहा—'माँ ! आज दिनभर पाठशालामें मेरा रोते ही बीता है। मेरे गुरुजी मर गये। मेरी गुरुआनीजी और उनके बच्चे रो रहे थे। मैंने उनको रोते देखा। वे कह रहे थे कि हम लोग एकदम गरीब हैं, हमारे पास खाने-पीनेके लिये कुछ भी नहीं है और न कोई ऐसे प्यारे पड़ोसी ही हैं, जो हमारी सहायता करें। माँ ! उनको रोते देखकर और उनकी बात सुनकर मुझे बड़ा ही दुःख हो रहा है। तुझे उनकी सहायताके लिये कुछ-न-कुछ करना पड़ेगा।'

बालककी बातें सुनकर रानीका हृदय दयासे भर आया। उसने तुरंत नौकरको पता लगाने भेजा और बच्चेका मुँह चूमकर कहा—'बेटा ! नन्हीं-सी उम्रमें तेरी ऐसी अच्छी बुद्धि और अच्छी भावना देखकर मुझे बड़ी ही प्रसन्नता हुई है। तेरी गुरुआनीजी और उनके बच्चोंके लिये मैं अवश्य प्रबन्ध करूँगी। तू चिन्ता मत कर।'

रानीके भेजे हुए आदमीने लौटकर बताया कि 'बात बिल्कुल सच्ची है।' रानीने बच्चेको पाँच सौ रुपये देकर गुरुआनीके पास भेजा और फिर कुछ ही दिनोंमें, उनके कुटुम्बका निर्वाह हो सके और लड़के पढ़ सकें, इसका पूरा प्रबन्ध करवा दिया।

## संकटग्रस्त जहाजको बचानेवाला दयालु बालक

कई वर्ष हुए, जाड़ेके दिनोंमें समुद्रके किनारे एक गाँवमें शोर हुआ कि 'एक जहाज थोड़ी दूरपर कीचड़में फँस गया है और उसपर बैठे हुए लोग बड़े संकटमें हैं।' इस बातको सुनते ही चारों ओरसे लोग एकत्र होने लगे और चिन्ता करने लगे। उस समय वहाँ एक भी नाव न थी, जिससे उनको उतारा जा सके। तीन दिनोंतक इस

प्रकार सब लोग खाये-पीये बिना समुद्रमें फँसे रहे। पानी बहुत गहरा होनेके कारण कोई तैर करके भी वहाँ नहीं जा सकता था। बहुत लोग दया प्रकट करने लगे; पर किसीका साहस न हुआ कि उनको बचावे। इतनेमें एक विद्यार्थी वहाँ आया। जहाजके आदमियोंपर उसको बड़ी दया आयी। वह बहुत बलवान् न था; परंतु था बड़ा साहसी। इसलिये तुरंत बोल उठा—'मैं उनको बचानेके लिये जाता हूँ।' इतना कहकर उसने एक आदमीसे रस्सा लेकर उसकी छोरको अपनी कमरमें बाँधा और वह समुद्रमें कूद पड़ा। सब लोग उसकी हिम्मत देखकर आश्चर्य करने लगे और उसकी सफलताके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करने लगे।

वह विद्यार्थी बड़ी कठिनतासे समुद्रमें तैरने लगा। उसके मनमें यह विश्वास था कि मैं जाकर संकटमें पड़े लोगोंको बचा लूँगा। गहरे पानीमें लम्बी दूरतक तैरना कठिन काम है। दूसरे लोग जो यह सब कुछ देख रहे थे, उनके शरीर उसकी अपेक्षा बहुत मजबूत होनेपर भी वे तैरनेसे डरते थे। वह विद्यार्थी दयाके आवेशमें कष्ट उठाकर भी जहाजके पास पहुँच गया। उसने दाँतोंमें चाकू पकड़ रक्खा था, उससे कमरकी रस्सी काट डाली। किनारेपर खड़े हुए उसके मित्रने वह रस्सा पकड़ रक्खा था; ताकि यदि वह तैर न सके तो उसको वापस खींच लिया जाय। उसके बाद जहाजमेंसे एक आदमीको साथ लेकर वह तैरता हुआ
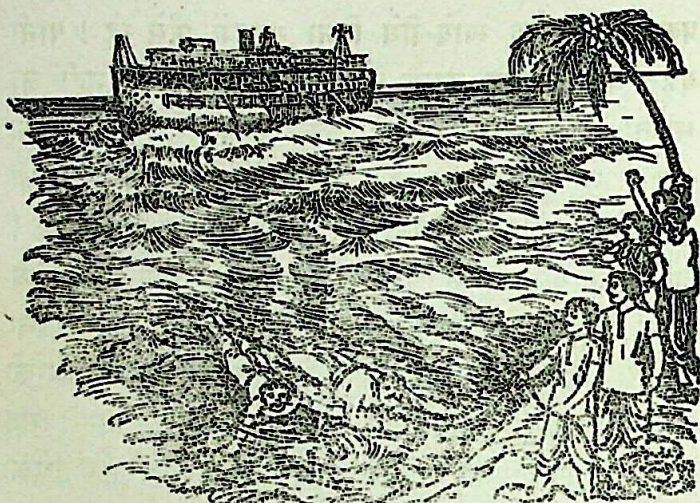
किनारेपर लौट आया। उसके बाद दूसरी बार गया और फिर दूसरी बार एक आदमीको साथ लेकर आया। इस प्रकार छः बार जाकर उसने छः आदमियोंके प्राण बचाये। अब वह खूब थक गया था, फिर सातवीं बार जाकर उसने एक दुर्बल लड़केको लानेका प्रयत्न किया। लड़का दुर्बल होनेके कारण ठीक न तैर सका और डूब गया। तब उसने डुबकी मारकर उसे ऊपर निकाला। इस प्रकार दो बार उसने डुबकी मारकर उसे निकाला। अन्तमें बड़ी कठिनतासे उसको भी किनारे ले आया। किनारेपरके आदमियोंने प्रत्येक बार ऊँचे स्वरसे उसको शाबाशी दी और अन्तिम बार तो उसको खूब ही शाबाशी दी।

# रेलगाड़ीको बचानेमें प्राण देनेवाला बालक

एक आदमी रेलवेमें नदीके ऊपर पुलके चौकीदारका काम करता था। उसका एक चौदह वर्षका लड़का भी उसीके साथ रहता था। एक दिन बड़ा तूफान आया और उसके साथ जोरका पानी। रातकी गाड़ी आनेके पहले पिता पुल देखनेके लिये गया और लड़का घरमें रहा। उसके थोड़ी देर बाद नदीमें बाढ़ आयी और उससे कई गाँव बह गये। पीछे लड़का भी बाहर निकला और पुल देखने गया तो उसे टूटा हुआ पाया। उसने अपने पिताको पुकारा, पर कुछ भी उत्तर नहीं मिला। उसने निश्चय किया कि रातकी अन्तिम गाड़ी आनेका समय हो गया है; इसलिये यदि गाड़ीको रोका न गया तो वह नदीमें चली जायगी और सब यात्री मर जायँगे।

इस विचारसे उसके मनमें दयाका संचार हुआ और उसने दृढ़ निश्चय किया कि किसी भी प्रकारसे गाड़ीको रोकना चाहिये।

रेलगाड़ी पहाड़के एक तंग दर्रेसे होकर निकलती थी और वहाँ खड़े होनेतककी जगह न थी। अब क्या किया जाय? उसी समय उसको यह सूझ हुई कि एक ठेला पटरियोंपर खड़ा करके लाल रोशनी दिखलायी जाय तो गाड़ी जरूर खड़ी हो जायगी। उसने ठेलेको नाकेपर ले जाकर खड़ा कर दिया और हाथमें लाल रोशनी लेकर उसपर खड़ा हो गया। इतनेमें ही रेलगाड़ी आ गयी। ड्राइवरने

उसे देखकर गाड़ी खड़ी करनेकी चेष्टा की; परंतु वह वेगमें थी, इसलिये रुक न सकी। लड़केने खूब चिल्लाकर कहा—'पुल टूट गया है, पुल टूट गया है।' इतनेमें इंजनका धक्का ठेलेके लगा और वह ठेला उस लड़केको कई फुट ऊँचे
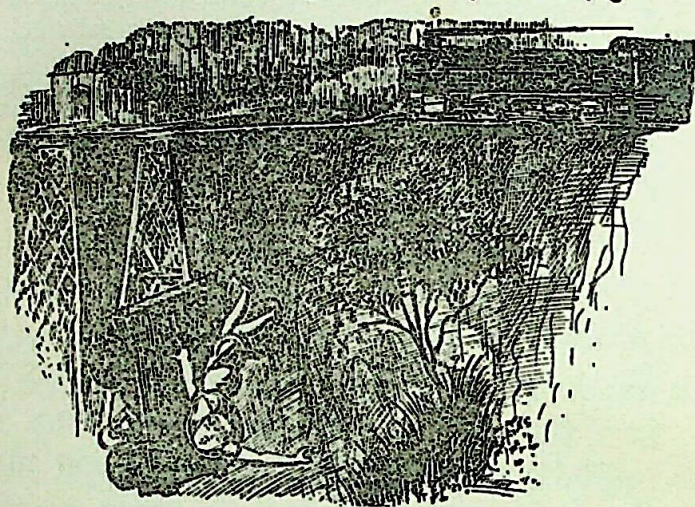
उछालकर पछाड़ खाकर गिरा और चूर-चूर हो गया। उसके बाद गाड़ी खड़ी हो गयी और ड्राइवरने उस लड़केको देखा तो उसे मरा हुआ पाया।

दूसरे दिन बड़े सम्मानके साथ पासके गाँवमें उसकी कब्र बनायी गयी और उसपर लिखा गया—

'कार्ल स्प्रिंगेल, उम्र वर्ष १४।'

वह बहादुरीसे और परोपकार करता हुआ मरा। उसने अपने प्राण देकर दो सौ आदमियोंके प्राण बचाये।

# गाँवको डूबनेसे बचानेवाला बालक

यूरोपमें हालैंड देशका कुछ भाग समुद्रकी सतहसे नीचा होनेके कारण कभी-कभी समुद्रका जल आकर उस भागमें बसे गाँवोंको डुबो देता था। इस दुःखसे बचनेके लिये वहाँके लोगोंने समुद्रके किनारे एक ऊँचा बाँध बना रक्खा था। फिर भी कभी-कभी जलका इतना वेग होता कि वह बाँध तोड़कर वहाँके लोगोंको नुकसान पहुँचाता। बाँध टूटनेसे पहले क्या-क्या नुकसान हुआ था, इसे घरके बड़े लोग अपने-अपने लड़कोंको बार-बार बताते और कहते कि 'यदि बाँधसे तनिक भी पानी निकलने लगे तो उसके रोकनेका तुरंत उपाय करना चाहिये। नहीं तो वह पानी बाँध तोड़कर एक साथ जोरसे आ जायगा और जान-मालको बड़ी हानि पहुँचायेगा।'

एक दिन जाड़ेमें एक लड़का उस बाँधके पाससे होकर जा रहा था; इतनेमें उसने देखा कि बाँधमेंसे धीरे-धीरे पानी निकल रहा है। तुरंत ही उसे अपने बापकी कही बात याद आयी। उसने विचार किया कि 'दौड़कर मैं यह बात अपने पितासे कहूँ या यहाँसे भागकर किसी ऊँची जगहपर चढ़ जाऊ।' फिर उसके मनमें आया कि 'ऊँची जगह चढ़नेपर मैं अकेला तो बच जाऊँगा, पर दूसरे सभी लोग मर जायँगे। क्या, मैं उनको भी किसी तरह नहीं बचा सकता ?

मैं दौड़ता हुआ सबसे कहने जाऊँगा और इतनेमें पानी जोरसे आ जायगा और छेद बड़ा हो जानेसे सारा गाँव डूब जायगा। इसलिये यदि किसी तरह बाँधमेंसे आते हुए जलको रोक सकूँ, तभी मैं, मेरे पिता तथा सब लोग बच सकेंगे।'

इसके बाद उसने सोच-विचारकर अपना हाथ वहाँ दे दिया, जहाँसे जल आ रहा था और इस प्रकार जलका आना तथा छेदका बढ़ना रोक दिया। सारी रात उसने इसी प्रकार अपना हाथ पानी रोकनेमें लगाये रक्खा। एक तो कड़ाकेके जाड़ेकी रात थी, दूसरे वह ठंढी जगह बैठा था और तीसरे उसका हाथ पानीमें डूबा हुआ था। इन तीनों कारणोंसे उसे बहुत ही अधिक जाड़ा लग रहा था, पर वह इसकी तनिक भी परवा न करके जहाँ-का-तहाँ ही बैठा रहा। घरपर उसका पिता उसकी बाट जोह रहा था। सबेरेके समय उधरसे जाते हुए एक आदमीने उस लड़केको बाँधके पास बैठे और बाँधके छेदमें हाथ घुसेड़े हुए देखकर पूछा—'तू यहाँ क्या कर रहा है?' लड़केने लड़खड़ाती हुई आवाजमें कहा कि 'यहाँसे पानी निकलता है, इसको मैंने रोक रक्खा है, नहीं तो गाँव डूब जायँगे।' इससे अधिक वह बोल न सका; क्योंकि वह भूखा था और घोर शीतके कारण बेसुध हो गया था। इसके बाद उस आदमीने उसका हाथ निकालकर अपना हाथ वहाँ डाल दिया और सहायताके लिये पुकार मचायी। थोड़ी देरमें लोग आ गये और उन्होंने पानी निकलने-की जगहको अच्छी तरह भर दिया। पीछे उस लड़केको

लोगोंने बहुत सम्मान प्रदान किया; क्योंकि स्वयं संकट झेल-कर उसने सारे गाँवको डूबनेसे बचाया था।

## दयालु बालक टामस फिप

उस समय क्रीमिया और रूसके बीच युद्ध चल रहा था। टामस फिप नामक एक बालक ग्रेनेडियर दलके बैंडमें बाँसुरी बजाता था। उस समय इनकारमैनका भीषण युद्ध चल रहा था। फिपने पास ही एक घायल सैनिकको तड़फड़ाते देखा और यह कहते सुना—'कोई मुझको एक प्याला चाय पिला देता तो बहुत अच्छा होता।' बालकका करुण हृदय उस सैनिककी अन्तिम इच्छा पूरी करनेके लिये व्याकुल हो उठा। सैनिकोंकी झोलीमें चाय-पानीकी शीशी तथा केटली आदि रहती है। उस समय दनादन गोलियोंकी बौछार हो रही थी; फिर भी उस बालकने प्राणोंकी जरा भी परवा न करके

गोलियोंकी वर्षामें भी आस-पाससे लकड़ियोंके टुकड़े इकट्ठे किये और आग जलाकर चाय बनाना शुरू किया। इतनेमें एक गोली उसकी टोपके ऊपरसे चली गयी और दूसरी गोली उसके कोटकी बाँहमेंसे आर-पार हो गयी। एक बार उसके कंधेमें हल्की चोट भी लगी; परंतु बालक उसपर
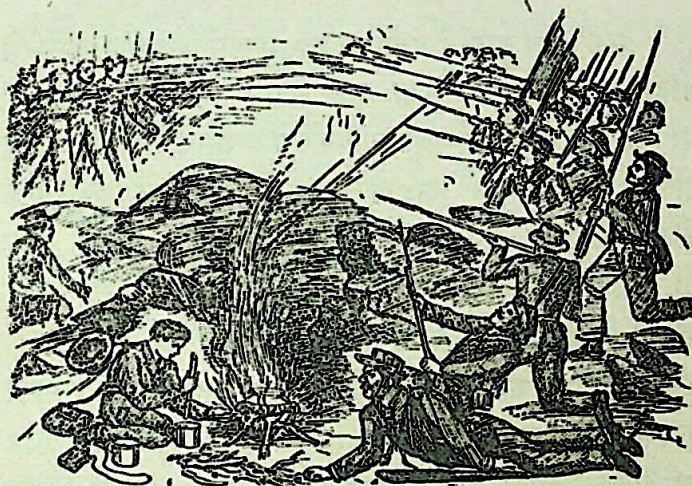
कुछ भी ध्यान न देकर दयार्द्र-हृदयसे उस सैनिकको गरमा-गरम चाय पिलाकर उसकी प्यास बुझा रहा था। आस-पास अनेक घायल सैनिक पड़े थे। उन्होंने उस बालककी इतनी अधिक सहानुभूति देखकर मृत्युके समय सच्चे अन्तःकरणसे उसे आशीर्वाद दिया।
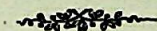
# मनुष्योंको डूबनेसे बचानेवाला बालक

एक समय समुद्रमें भयानक तूफान आनेके कारण किनारेसे थोड़ी दूरतक आया हुआ एक जहाज डूबनेकी तैयारीमें था। उसके मुसाफिरों तथा नाविकोंको बचानेके लिये किनारेसे नावका जाना जरूरी था; परंतु उसको चलानेके लिये एक और आदमीकी जरूरत थी। किनारेपर एक लड़का खड़ा था, उसे यह देखकर दया आ गयी और वह उस नावपर जानेके लिये तैयार हो गया। उस समय उसकी माँ भी वहीं खड़ी थी। लड़केने अपनी माँसे कहा—'माँ! मैं इस नौकाको सहायता दूँ ? उस जहाजके लोग तभी बच सकेंगे, जब नाव वहाँ पहुँच जायगी।'

बालककी यह बात सुनकर माँके मनमें बड़ा मोह आ गया; क्योंकि इस बालकका पिता छः महीने पहले नावमें बैठकर समुद्रमें गया था। और फिर अबतक लौटकर नहीं आया। लोगोंने समझ लिया कि वह मर गया होगा। इस बालकके सिवा उस स्त्रीको दूसरा कोई आधार न था। उसने सोचा कि—'यदि बालकको भी कुछ हो गया तो मेरा कोई भी सहारा न रह जायगा।' यों विचार करते-करते उस स्त्रीकी

दृष्टि जहाजकी ओर गयी। देखती क्या है कि उसके आदमी बड़ी आतुरतासे नावकी बाट देख रहे हैं और जहाजमें पानी अधिक-अधिक भरता जा रहा है। इससे उसने विचारा कि 'इन सब लोगोंका घर भी दूर होगा और इन सबके कितने अधिक संगी-साथी, पत्नियाँ, लड़के, माँ-बाप और बहिनोंको बड़ा कष्ट पहुँचेगा। मेरा बच्चा नाव डूबनेसे यदि मर जायगा तो इससे केवल मेरा नुकसान होगा और मैं किसी भी प्रकार अपना गुजारा कर लूँगी। इसलिये इन सब लोगोंके सगे-साथियोंके अहित होनेकी अपेक्षा मुझ अकेलीका अहित होना अच्छा होगा।' ऐसा विचारकर उसने लड़केसे कहा—'मेरे बेटा! तू जा, परमात्मा तुझे जीता-जागता रक्खे।'

इसके बाद वह बालक नावमें बैठा और थोड़ी ही देरमें डूबते हुए जहाजके पास जा पहुँचा। जहाजके सब लोगोंके प्राण बच गये। दैवयोगसे उसी जहाजपर उस बालकका पिता भी था। उस बालकने और उसके साथकी नौकाके खलासियोंने उसको पहचाना। बालकने उससे पूछा—'इतने दिनोंतक तुम कहाँ थे? हमलोगोंने तो समझा था कि तुम मर गये होगे।'

इसके उत्तरमें बालकके पिताने कहा—'समुद्रमें बड़ा तूफान आनेसे मेरी नाव उलट गयी; पर इतनेमें एक पटरा हाथ लगा और उसका आधार लेकर मैं तैरने लगा। उस किनारे एक जहाज जाता था। उसपरके आदमियोंने

मुझे देखा और उन्होंने मुझे ऊपर ले लिया। वह जहाज अफ्रीका पहुँचा और वहाँसे यह जहाज चला। इसपर बैठकर मैं घर आ रहा था, इतनेमें फिर पीछेसे तूफ़ान आ गया और तुम यह नाव लेकर आये।'

इसके बाद अपने लड़केके साथ वह घर गया। लड़केने माँसे कहा—'देखो माँ! तूने मुझे नावमें जानेकी आज्ञा दी तो मेरे पिताजी भी बच गये!' वह स्त्री अपने स्वामीको देखकर बहुत ही प्रसन्न हुई और ईश्वरका उपकार मानने लगी। वह बालक दूसरे लोगोंका प्राण बचाने गया था, उसका फल उसे कैसा अच्छा मिला। अच्छा काम करने-वालेका ईश्वर सदा भला करता है।

# दुखी मुसाफिरकी सेवा करनेवाला बालक

एक गाँवके रास्तेपर एक दिन एक लँगड़ा नाविक बैठा था। भयानक गरमी पड़ रही थी और अपनी टेकनेवाली लाठीके टूट जानेके कारण उस बेचारेसे चला नहीं जाता था। 'रास्तेमें कोई गाड़ी मिल जाती तो मुझे अपने गाँवमें पहुँचा देती'—इस आशासे बैठा वह किसी गाड़ीकी बाट देख रहा था। इतनेमें वहाँ एक गाड़ी आयी। उसमें अपनेको बैठा लेनेके लिये उसने प्रार्थना की; परंतु गाड़ीवानने भाड़ा माँगा। उसके पास कुछ था नहीं, इससे वह नहीं जा सका। बहुत देरतक दूसरी कोई गाड़ी न आनेके कारण वह अन्तमें एक वृक्षके नीचे जाकर सो गया। थोड़ी देरके बाद उसकी नींद टूटी तो देखता क्या है कि जल बरस रहा है। और उसके ऊपर किसीने कपड़ा ओढ़ा दिया है और पास ही एक बालक टूटी हुई लाठीको रस्सीसे बाँधकर उसे कामके योग्य बना रहा है। यह देखकर लँगड़ेने उस लड़केसे पूछा—'अरे भले लड़के! तू क्यों नंगा बैठा है और मेरे ऊपर अपने कपड़ेको तूने क्यों डाल दिया है?'

बालकने जवाब दिया—'मैं इधरसे जा रहा था, इतनेमें तुमको मैंने पानीमें भीगते देखा। तुम गहरी नींदमें सोये थे, वर्षासे भीग जानेपर तुम जाग उठते और तुम्हारी नींद

जाती रहती, यह बात मुझको अच्छी नहीं लगी । इसके सिवा, तुम बूढ़े हो, सर्दी लगनेपर बीमार पड़ जाते । इसलिये मैंने अपना कोट उतारकर तुम्हारे ऊपर डाल

दिया। मैं बालक हूँ, इससे नंगा रह सकता हूँ। तुम्हारी लाठी-को टूटी हुई देखकर मैं अपनी रस्सीसे उसे बाँध रहा हूँ। यहाँसे थोड़ी दूरपर मेरा गाँव है, वहाँ मेरे साथ तुम चलोगे तो मैं अपने काकाकी नयी लाठी तुमको दिला दूँगा।'

उस बालककी यह बात सुनकर उस नाविकको बड़ा आश्चर्य हुआ और उसकी आँखोंसे एकाएक आँसू गिरने लगे। यह देखकर लड़केने उससे पूछा—'तुम क्यों रो रहे हो?' यह सुनकर लँगड़ा बोला—'मेरा लड़का भी तुम्हारे-जैसा ही भला था और तुम्हारी-जैसी ही उसकी मधुर वाणी थी। पाँच वर्ष हुए, मैं जहाजमें नौकरी करने गया था। अब वह लड़का कहाँ होगा, यह याद करके रोता हूँ।'

यह सुनकर उस लड़केने पूछा—'उस लड़केका नाम क्या है?' लँगड़ा बोला—'उसका नाम विठ्ठल है और मेरा नाम जीवो है।' नाम सुनकर वह लड़का उछलकर लँगड़ेकी छातीसे चिपक गया और कहने लगा कि 'बाबा! मैं ही तुम्हारा विठ्ठल हूँ।' फिर वह बालक उसको गाँवमें ले गया और अपने काकाको उसने सारे समाचार कह सुनाये। इसके बाद दोनों भाई मिले और आनन्दसे एक साथ रहने लगे। तुरंत ही नयी लाठी तैयार की गयी और उसको लेकर नाविक जहाँ-तहाँ गाँवमें घूमने लगा। उसने उस पुरानी लाठीको, जिसे उस बालकने सुधारा था, मूल्यवान् सम्पत्तिकी भाँति आजीवन बचाकर रक्खा; क्योंकि उस लाठी-के कारण लड़केका और दोनों भाइयोंका मिलाप हुआ था।

## बालक अन्सारुल हककी दयालुता

बिहार प्रान्तके बेलवागंजके एक गरीब व्यक्तिके मकानमें एक दिन आग लग गयी। उस समय जो लोग उस मकानमें थे, भागकर बाहर निकल आये। बाहर आनेपर उन्हें याद आया कि एक छोटा बच्चा मकानमें ही रह गया है। वे लोग चाहते थे कि उस शिशुको निकाल लें; किंतु उस समयतक फूसका छप्पर धधक उठा था। मकान चारों ओरसे आगकी लपटोंसे ढक गया था। किसीका साहस उसमें जाकर बच्चेको लानेका नहीं हुआ। बच्चेकी माता तथा उसके सम्बन्धी बाहर खड़े रो रहे थे।

आगकी लपटोंको देखकर वहाँकी पाठशालाके कुछ विद्यार्थी भी दौड़े आये और अग्नि बुझानेका प्रयत्न करने लगे। उनमेंसे एक विद्यार्थीने जैसे ही सुना कि जलते घरमें एक नन्हा बालक सोता हुआ रह गया है, वैसे ही उसने

अपना कुर्ता उतार फेंका और दौड़कर आगकी लपटोंमें होता वह घरमें घुस गया। वह जानता नहीं था कि बच्चा किस स्थानपर है, अतः ढूँढ़नेमें उसे कुछ मिनट लग गये। बच्चेको गोदमें छिपाये दौड़ता हुआ जब वह निकला, बच्चे-की माताने दौड़कर अपने बच्चेको गोदमें ले लिया।
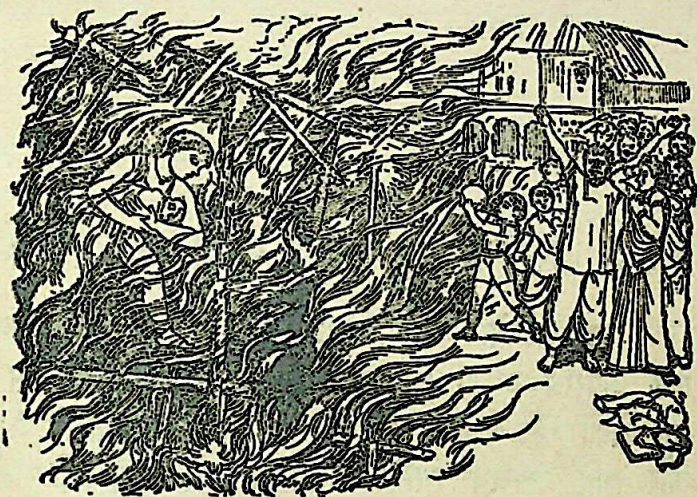
उस वीर बालकका नाम अन्सारुल हक था, जिसने अपनेको आगकी लपटोंमें डालकर शिशुके प्राण बचाये थे। अन्सारुल हक स्वयं पर्याप्त जल गया था और इसलिये अस्पताल जाकर उसे अपनी चिकित्सा करानी पड़ी; किंतु अपने सत्साहससे उसने एक शिशुके प्राणोंके साथ मनुष्यता-की रक्षा की। कर्तव्यके लिये प्राण दे सकनेवाला ही तो सच्चा मनुष्य है।

## बुराई करनेवालेकी भलाई करनेवाला बालक

एक शहरके स्कूलमें ऐसा नियम था कि कोई बालक कुछ अपराध करता था तो गुरुजी उसके वर्गके दूसरे बालकोंको पंच बनाकर उनके द्वारा ही फैसला कराते थे। और यदि अपराध साबित होता तो उसे सिर्फ रोटी-पानी देकर एक अँधेरी कोठरीमें डाल देते थे। साथ ही यह भी नियम था कि यदि कोई लड़का उस अपराधीके बदले कैदखानेमें रहना चाहे तो अपराधी लड़केको छोड़कर उस दूसरे लड़केको कैदमें डाल दिया जाता था।

उस स्कूलमें एक शरारती लड़का सदा ही ऊधम मचाता और कैद भोगता था। गुरुजी भी उससे तंग आ गये थे। गुरुजीने तो अब यहाँतक कह दिया था कि

'यदि तुम अब ऊधम मचाओगे तो तुमको सदाके लिये स्कूलसे निकाल दिया जायगा।'

इतना होनेपर भी एक दिन उस ऊधमी लड़केने एक दूसरे लड़केको मारा। पंचोंने फैसला देते हुए उसे अपराधी ठहराया। फिर वर्गमें पूछा गया कि 'उसके बदलेमें कोई कैदमें जानेके लिये तैयार है?' सब छात्रोंने कहा—'वह बहुत ही खराब लड़का है, उसके ऊपर हम दया नहीं करेंगे।' उस समय वह लड़का, जिसको ऊधमी लड़केने मारा था, सामने आया। उसके मनमें दया आ गयी और वह बोला—'गुरुजी! मैं उसके बदले कैदखाने जानेके लिये तैयार हूँ।'

यह सुनकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। इसके बाद उसे कैदखानेमें डाल दिया गया और वह ऊधमी लड़का छोड़ दिया गया। इससे वह विचार करने लगा कि 'मैंने जिसे मारा था, उसीने मुझे छुड़ाया। अहा! वह कैसा अच्छा लड़का है। उसके मनमें इस विषयमें तरह-तरहके विचार उठे और वह पश्चात्ताप करने लगा। अन्तमें उसने गुरुजीसे अपने अपराधके लिये क्षमा माँगी और उस लड़केको छोड़नेके लिये प्रार्थना की तथा वचन दिया कि 'मैं अब कभी कोई बुरा काम नहीं करूँगा।' उसके बाद उसने फिर कभी कोई ऐसा अपराध नहीं किया।

इससे यह शिक्षा मिलती है कि बुरा करनेवालेका हित करके उसे सुधारना चाहिये, न कि बुरी बात कहकर या

मारकर अथवा और किसी तरह बदला लेकर। सच्ची क्षमा वही है, जिससे शत्रुका भी हित हो। उपर्युक्त लड़का ऐसा ही सच्चा क्षमाशील था।

# दयालु विद्यार्थी बालक

कलकत्तेके एक स्कूलमें दो भले विद्यार्थी पढ़ते थे। प्रतिवर्ष उनका पहला और दूसरा नंबर आता था। पहले विद्यार्थी-की माँ बीमार पड़ी और मर गयी। इससे वह लड़का दो महीने स्कूल नहीं जा सका। लोगोंने सोचा कि इस बार परीक्षामें दूसरे विद्यार्थीका पहला नंबर आयेगा। पर जब परीक्षाका फल निकला, तब पता लगा कि जो दो महीने स्कूल नहीं गया था, इस बार भी उसका पहला नंबर आया है। इससे शिक्षकको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने दोनों लड़कों-की उत्तर-पुस्तकें देखीं तो पता चला दूसरे विद्यार्थीने बहुत-से प्रश्नोंका पूरा उत्तर नहीं लिखा है। वे प्रश्न इतने सरल थे कि उसका उत्तर न आता हो, ऐसी बात नहीं थी। इसलिये शिक्षकने उस विद्यार्थीसे एकान्तमें पूछा तो उसने बतलाया कि 'वह लड़का मेरी अपेक्षा कहीं अधिक बुद्धिमान् है। उसकी माँ मर गयी। इससे उसकी पढ़ाईमें विघ्न पड़ा और मुझको पहला नंबर मिलनेकी स्थिति हो-सी गयी, पर यह मुझे ठीक न लगा। जान-बूझकर मैंने अधूरा उत्तर लिखा है। मेरी तो माँ है, इस बेचारेकी माँ नहीं। आप कृपया इस बातको अपनेतक ही रक्खें।'

शिक्षकको उस विद्यार्थीकी दया और उदारताको देखकर बहुत ही संतोष हुआ और उसने कहा—'सबसे

बड़ी परीक्षा, जो महत्त्वकी परीक्षा है, उसमें तुम्हारा सबसे पहला नंबर आया है। इस परीक्षाके सामने स्कूलकी परीक्षाका कोई मूल्य ही नहीं है।'

## कैदी बालककी दया

एक बालकको किसी अपराधमें कैदकी सजा हो गयी थी। एक बार अवसर पाकर वह जेलसे भाग निकला। बड़ी भूख लगी थी, इसलिये समीपके गाँवमें उसने एक झोपड़ीमें जाकर कुछ खानेको माँगा। झोपड़ीमें एक अत्यन्त गरीब किसान-परिवार रहता था। किसानने कहा—'भैया! हमलोगोंके पास कुछ भी नहीं है, जो हम तुमको दें। इस साल तो हम लगान भी नहीं चुका सके हैं। इससे मालूम

होता है दो-ही-चार दिनोंमें यह जरा-सी जमीन और झोपड़ी भी कुर्क हो जायगी। फिर क्या होगा, भगवान् ही जानें।'

किसानकी हालत सुनकर बालक अपनी भूखको भूल गया और उसे बड़ी दया आयी। उसने कहा—'देखो, मैं अभी जेलसे भागकर आया हूँ, तुम मुझे पकड़कर पुलिसको सौंप दो तो तुम्हें पचास रुपये इनाम मिल जायँगे। बताओ तो, तुम्हें लगानके कितने रुपये देने हैं?' किसानने कहा—'भैया! चालीस रुपये हैं; परंतु तुम्हें मैं कैसे पकड़वा दूँ?' लड़केने कहा—'बस, चालीस ही रुपये हैं, तब तो काम हो गया; जल्दी करो।'

किसानने बहुत—नाहीं की, परंतु लड़केके हठसे किसानको उसकी बात माननी पड़ी। वह उसके दोनों हाथोंमें रस्सी बाँधकर थानेमें दे आया। किसानको पचास रुपये मिल गये। बालकपर जेलसे भागनेके अभियोगमें मुकद्मा चला। प्रमाणके लिये गवाहके रूपमें किसानको बुलाया गया। 'कैदीको तुमने कैसे पकड़ा?' हाकिमके यह पूछनेपर किसानने सारी घटना सच-सच सुना दी। सुनकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ और लोगोंने इकट्ठे करके किसानको पचास रुपये और दे दिये। हाकिमको बालककी दयालुतापर बड़ी प्रसन्नता हुई। पहलेके अपराधका पता लगाया गया तो मालूम हुआ कि बहुत ही मामूली अपराधपर उसे सजा हो गयी थी। हाकिमकी सिफारिसपर सरकारने बालकको
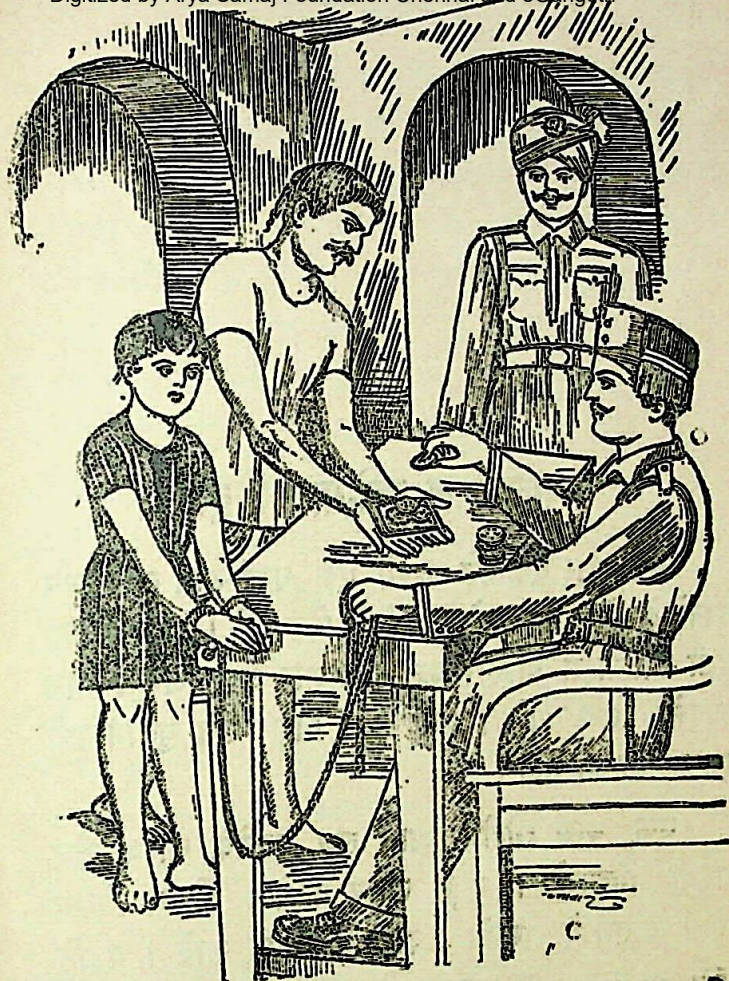
बिल्कुल छोड़ दिया और उसकी बड़ी तारीफ तथा ख्याति हुई । पुण्य तो हुआ ही ।

# दयालु और बुद्धिमान् विट्ठल

एक बार एक बड़े शहरमें एक घरमें आग लगी और देखते-देखते आस-पासके घरोंमें भी फैल गयी। घरके आदमी बड़ी कठिनाईसे बाहर निकल सके और अपना-अपना माल बचानेमें लग गये। कुछ देरके बाद आग बुझानेवाली दमकल भी आ गयी।

एक घरमें सीढ़ीमें आग लग जानेके कारण तीन आदमी निकलनेका बहुत उपाय करनेपर भी न निकल सके। अन्तमें वे रास्तेके ऊपरके किनारेपर आये। वहाँसे कूदते तो उनके प्राण तुरंत ही चले जाते। रास्तेमें खड़े लोगोंने उनको देखा तो सही, पर इतनी लंबी सीढ़ी न होनेके कारण वे निरुपाय हो गये।

उन तमाशा देखनेवाले लोगोंमें एक विट्ठल नामका बारह-तेरह वर्षकी उम्रका जूता साफ करनेवाला लड़का था। उस लड़केने यह करुणाजनक दृश्य देखा और इधर-उधर नजर दौड़ायी। उसने रास्तेपर एक तारका खंभा खड़ा देखा। जलते घरके छप्परमें एक हुक मारकर तारका एक छोर वहाँ बँधा था। यदि खंभेवाला छोर काट दिया जाता तो तार सीधे मकानके किनारे जमीनकी ओर लटक जाता। इसलिये तुरंत इधर-उधर देखकर आग बुझानेवालोंकी रास्तेमें पड़ी एक कुल्हाड़ी उसने उठा ली और उसे साथ लेकर तुरंत वह खंभेपर चढ़ गया तथा थोड़ी ही देरमें तारके छोरको काट डाला। तार काटे जानेपर वह घरकी छतसे नीचेकी ओर लटक गया और उसको पकड़कर एक-एक करके तीनों आदमी तुरंत ही नीचे उतर आये। विट्ठलकी यह समयानुसार सूझ और दयासे भरा हुआ काम देखकर लोगोंको बहुत ही आनन्द हुआ और उसको लोग शाबाशी देने लगे। उसके बाद उतरे हुए तीनों आदमियोंने उसको इनाम दिया और उस लड़केका उपकार माना। तुरंत ही अखबारोंमें उसका चित्र छपवाया गया और उसके इस कामकी बड़ी प्रशंसा की गयी।

देखो, बारह-तेरह वर्षका बहुत ही गरीब लड़का भी किस प्रकार तीन आदमियोंके प्राण बचा सका। मनुष्य चाहे कितना ही गरीब क्यों न हो, वह चाहे तो परोपकारका

सुन्दर काम अवश्य कर सकता है। यह बात इस उदाहरणसे बहुत अच्छी तरह समझमें आ सकती है।

# एक बूढ़े आदमीकी सहायता करनेवाली लड़की

एक बूढ़ा रास्तेमें बड़ी कठिनतासे चला जा रहा था। उस समय हवा बड़े जोरोंसे चल रही थी। अचानक उस बूढ़ेकी टोपी हवासे उड़ गयी। उसके पास होकर दो लड़के स्कूल जा रहे थे। उनसे बूढ़ेने कहा—'मेरी टोपी उड़ गयी है, उसे पकड़ो। नहीं तो मैं बिना टोपीका हो जाऊँगा।' वे लड़के उसकी बातपर ध्यान न देकर टोपीके उड़नेका मजा लेते हुए हँसने लगे। इतनेमें लीला नामक एक लड़की, जो स्कूलमें पढ़ती थी, उसी रास्तेपर आ पहुँची। उसने तुरंत ही दौड़कर वह टोपी पकड़ ली और अपने कपड़ेसे धूल झाड़कर तथा पोंछकर उस बूढ़ेको दे दी। उसके बाद वे सब लड़के स्कूल गये। गुरुजीने यह टोपीवाली घटना स्कूलकी खिड़कीसे देखी थी। इसलिये पढ़ा लेनेके बाद उन्होंने सब विद्यार्थियोंके सामने वह टोपीवाली बात कही और लीलाके कामकी प्रशंसा की तथा उन दोनों लड़कोंके कामपर उन्हें बहुत धिक्कारा।

इसके बाद गुरुजीने अपने पाससे एक सुन्दर चित्रोंकी पुस्तक उस छोटी लड़कीको भेंट दी और उसपर इस प्रकार लिख दिया—

'लीला बहिनको उसके अच्छे कामके लिये गुरुजीकी ओरसे यह पुस्तक भेंट की गयी है।'
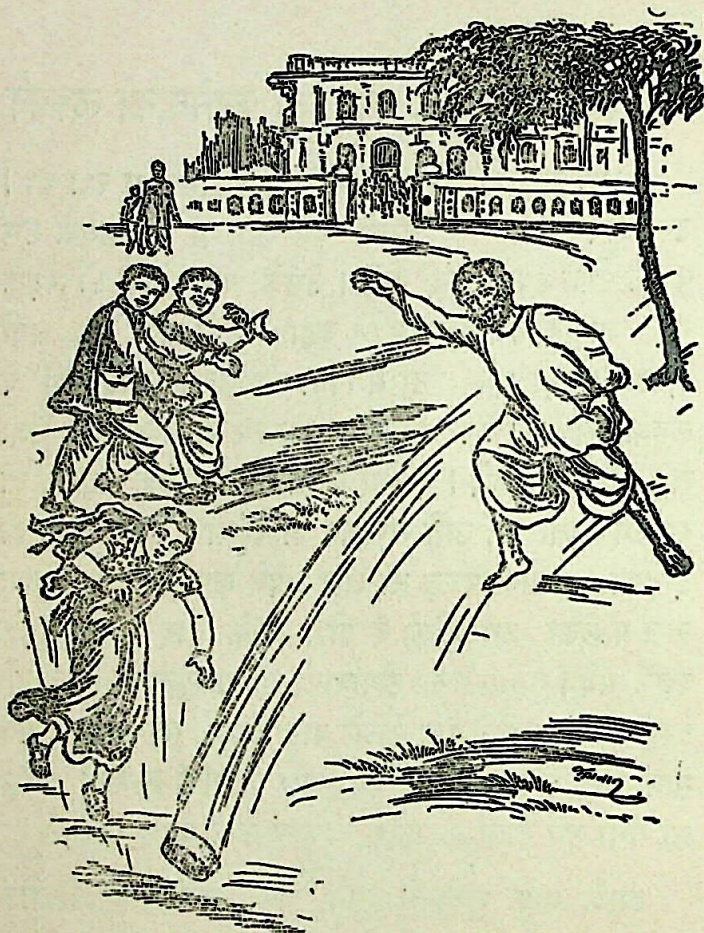
जो लड़के गरीब बूढ़ेकी टोपी उड़ती देखकर हँसे थे, वे इस घटनाको देखकर बहुत लज्जित और दुखी हुए ।

## दयालु बालिका ग्रेस

समुद्रमें बहुत-सी जगहोंपर ऐसी चट्टानें या छोटे पर्वत हैं, जो जलसे ऊपर नहीं दिखायी पड़ते। पानीमें चलनेवाले जहाज इनसे टकरा जायँ तो टुकड़े-टुकड़े हो जायँ। ऐसी चट्टानोंपर बहुत ऊँचा खंभा मीनार-जैसा बना दिया जाता है। रातके अँधेरेमें भी जहाज चट्टान कहाँ है, यह जान जायँ और उससे बचे रहें, उसके लिये उस खंभेके ऊपरी भागमें रातको तीव्र प्रकाश किया जाता है। ऐसे खंभोंको प्रकाश-स्तम्भ या 'लाइट-हाउस' कहते हैं। खंभेके निचले भागमें रहनेकी कोठरियाँ होती हैं, जिनमें प्रकाश-स्तम्भके कर्मचारी अपने परिवारके साथ रहते हैं।

इंगलैंडके पास समुद्रमें एक प्रकाश-स्तम्भ था। उस प्रकाश-स्तम्भका कर्मचारी एक दिन किसी कामसे इंगलैंड गया था। संयोगकी बात—उस दिन समुद्रमें बड़ा भारी तूफान आ गया। प्रकाश-स्तम्भमें उस कर्मचारीकी स्त्री और उसकी चौदह वर्षकी लड़की ग्रेस डार्लिंग थी। अचानक रातको बड़ा भारी शब्द हुआ। ऐसा लगा कि कहीं तोप छूट रही है। ग्रेस और उसकी माता समझ गयीं कि तूफानमें पड़कर कोई जहाज चट्टानसे टकराकर टूट गया है। लेकिन अँधेरी रातमें गरजते समुद्रमें उस जहाजके यात्रियोंको बचानेका कोई उपाय नहीं था। दोनों माता-पुत्री यात्रियोंकी प्राण-रक्षाके लिये रातभर भगवान्से प्रार्थना करती रहीं।

जैसे ही सवेरेका प्रकाश फैला, ग्रेस दूरबीन लेकर प्रकाश-स्तम्भके ऊपर चढ़ गयी और चारों ओर देखने लगी। उसने देखा कि प्रकाश-स्तम्भसे लगभग एक मील दूर टूटे हुए जहाज-का एक तख्ता समुद्रमें लहरोंपर उछल रहा है और उसपर नौ आदमी किसी प्रकार प्राण बचानेके लिये चिपके हैं। तख्ता समुद्रकी लहरोंमें डूबनेको अब-तब हो रहा है।

ग्रेस आँधीकी भाँति प्रकाश-स्तम्भसे उतरी। उसने कहा—'एक मील दूर एक तख्तेपर नौ आदमी बैठे हैं। मैं उन्हें बचाने जाती हूँ।'

माता तो अपनी पुत्रीकी बात सुनकर हक्की-बक्की रह गयी। समुद्र जैसे पूरे क्रोधसे उछल और गरज रहा था। इस समय बड़े-से-बड़ा जहाज भी समुद्रमें जानेका साहस नहीं कर सकता था और एक लड़की एक छोटी नौकापर बैठकर एक मील दूर जाना चाहती थी, यह पागलपन नहीं तो और क्या था! परंतु जिसके हृदयमें दयाकी आग धधक उठती है, वह अपनी ओर नहीं देखता, उसको तो तभी शान्ति मिलती है, जब वह दुःखमें पड़े हुए प्राणियोंका दुःख दूर कर दे। ग्रेस नौकामें कूद पड़ी। माता उसे पुकारती ही रह गयी, पर उसने सुना ही नहीं। बेचारी माता आँख फाड़-फाड़कर समुद्रकी ओर देखने लगी और जल्दी-जल्दी भगवान्‌का नाम ले-लेकर अपनी पुत्रीकी रक्षाके लिये कातर प्रार्थना करने लगी।

ग्रेसकी नौका पेड़ोंसे भी कई गुने ऊपर उछल जाती थी। लहर नौकाको बार-बार पटक रही थी, परंतु ग्रेसको अपने प्राण जानेका कोई भय ही नहीं था। उसको एक ही

धुन थी—'नौ मनुष्योंके प्राण मुझे बचाने हैं।'
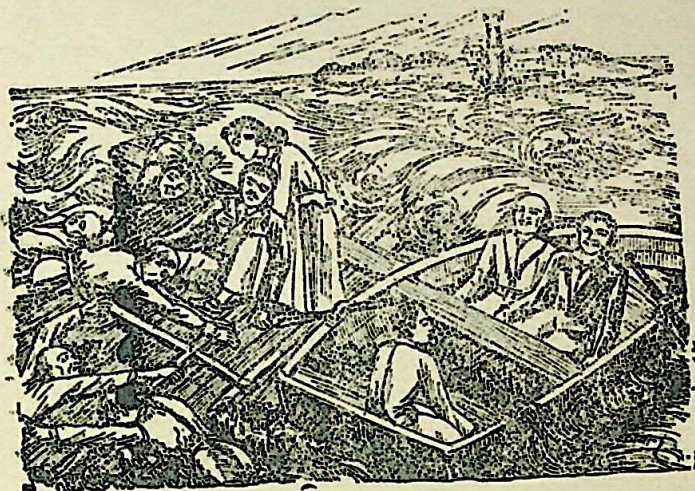
जो दूसरोंके प्राण बचानेके लिये अपने प्राण संकटमें डालता है, बड़ी-से-बड़ी विपत्ति उसके आगे सिर झुका देती है। सर्वशक्तिमान् भगवान् उसकी सहायता करते हैं। ग्रेसका परिश्रम अन्तमें सफल हो गया। उसकी नौका तख्तेके पास पहुँच गयी। उसने तख्तेपर बैठे मनुष्योंको नौकामें बैठा लिया और लौट आयी। जब ग्रेसकी नौका प्रकाश-स्तम्भके किनारे लगी, उसकी माता पागलकी भाँति 'मेरी बच्ची' कहकर दौड़ पड़ी और ग्रेसको उसने छातीसे चिपटा लिया।

ग्रेस डार्लिंगकी इस दया और साहसका इंगलैंडके बालक अब भी बड़े गर्वसे वर्णन करते हैं। ऐसी दयामयी बालिका ही किसी देशका मुख उज्ज्वल करती है।

# दुःख सहकर रेलगाड़ी बचानेवाली बालिका

एक गाँवके पास एक नालेके ऊपर रेलका पुल था। उस पुलके पासकी झोपड़ीमें एक लड़की अपने माता-पिताके साथ रहती थी। वर्षाके दिनोंमें संध्याके समय वह लड़की खिड़कीसे अपने पिताके आनेकी राह देख रही थी। इतनेमें उसने दूरसे पटरियोंपर रेलगाड़ीको आते हुए देखा। वह गाड़ी नालेकी ओर आ रही थी। फिर भी वह दूर जान पड़ती थी। वह लड़की तुरंत ही रोशनी जलाकर दौड़ी।

पुलके पास पहुँचकर उसने देखा कि पुल टूट गया है और इंजन तथा डिब्बे नालेमें पड़े हुए हैं। उसने निश्चय किया कि अभी दूसरी ओरकी गाड़ी आयेगी, तो उसकी भी यही दशा होगी। इसलिये उसको बचानेका प्रयत्न मुझे अवश्य करना चाहिये। ऐसा निश्चय करके वह वीर लड़की तुरंत पासके स्टेशनको चल पड़ी। वह स्टेशन पुलसे एक मीलकी दूरीपर था और वहाँ जानेके लिये रास्तेमें एक बहुत ही सँकड़ा लकड़ीका पुल था। ऐसी अँधेरी रातमें और तूफानमें उसके ऊपरसे जाना बहुत ही भयंकर था। फिर भी उस लड़कीने स्टेशन जानेका दृढ़ निश्चय कर लिया। इसलिये कठिनाईकी परवा न करके वह पुलपर घुटनेके बल बंदरके समान धीरे-धीरे पार हो गयी और फिर जोरसे दौड़ने लगी। उसके कपड़े काँटोंमें फँसते और फटते रहे तथा वह पानीसे खूब भीग गयी। फिर भी वह जैसे-तैसे करके जल्दी स्टेशन पहुँच गयी। उस समय वह हाँफ रही थी, इससे वह अधिक बोल न सकी। केवल 'ट्रेन रोको, ट्रेन रोको' कहकर वह जमीनपर गिर पड़ी। गाड़ी खुल गयी थी। स्टेशन-मास्टरने एक आदमीको दौड़ाकर गाड़ी रुकवायी। यदि ऐसा न होता तो उसमें बैठे हुए सारे आदमी मर जाते।

उसने बहादुरीसे खबर पहुँचाकर सैकड़ों आदमियोंके प्राण बचाये। उसके बदलेमें उसने उसका बड़ा उपकार माना। उन बच जानेवाले लोगोंको उस समय कितना अधिक
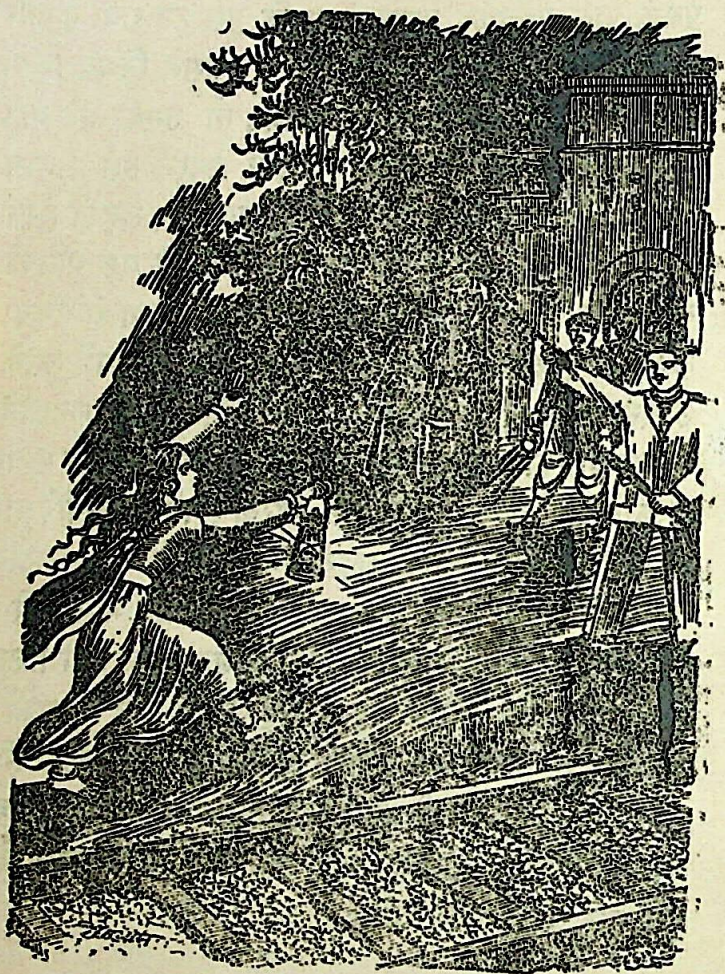
आनन्द हुआ होगा और वह लड़की स्वयं भी कितनी अधिक प्रसन्न हुई होगी !

# परोपकारी बालिका

इंगलैंड देशके जान मिडल्टनकी पत्नी मर चुकी थी। घरमें वह और उसकी पुत्री मे मिडल्टन बस दो ही व्यक्ति थे। जान मिडल्टन ग़रीब आदमी था। वह किसी प्रकार मजदूरी करके अपना काम चलाता था। उसकी पुत्री 'मे' अपने पिताके काममें सहायता करती थी। घरका सब काम वह अपने-आप ही करती थी।

मे मिडल्टन प्रत्येक रविवारको लन्दन जाती और सप्ताहभरके लिये घरमें जो वस्तुएँ आवश्यक होतीं, उन्हें खरीदकर लाती। एक रविवारको जब वह सामान लेकर लन्दनसे लौट रही थी तो उसने देखा कि सड़कके किनारे मैले-कुचैले कपड़ोंमें लिपटा एक बूढ़ा आदमी पड़ा है और कराह रहा है, जान पड़ता था कि वह बीमार है। 'मे' अपनी बग्घीसे उतर पड़ी। उसने उस बीमार बूढ़े आदमीको बग्घीपर चढ़ा लिया और उसे घर ले आयी।

यद्यपि जान मिडल्टन बहुत गरीब था, परंतु स्वभावका बहुत अच्छा था। उसने अपनी पुत्रीके कामकी प्रशंसा की। बीमार बूढ़े आदमीकी पिता-पुत्री दोनों सेवा करने लगे। वह बूढ़ा बहुत क्रोधी और चिड़चिड़े स्वभावका था। 'मे' के प्रति कृतज्ञता दिखानेके बदले वह उसे डाँटता और झिड़कता रहता था, लेकिन 'मे' ने उस बीमार आदमीकी झिड़कीपर कभी ध्यान नहीं दिया। वह बड़ी प्रसन्नतासे

उसकी सेवा करनेमें लगी रही। धीरे-धीरे बूढ़ेको आराम होने लगा।
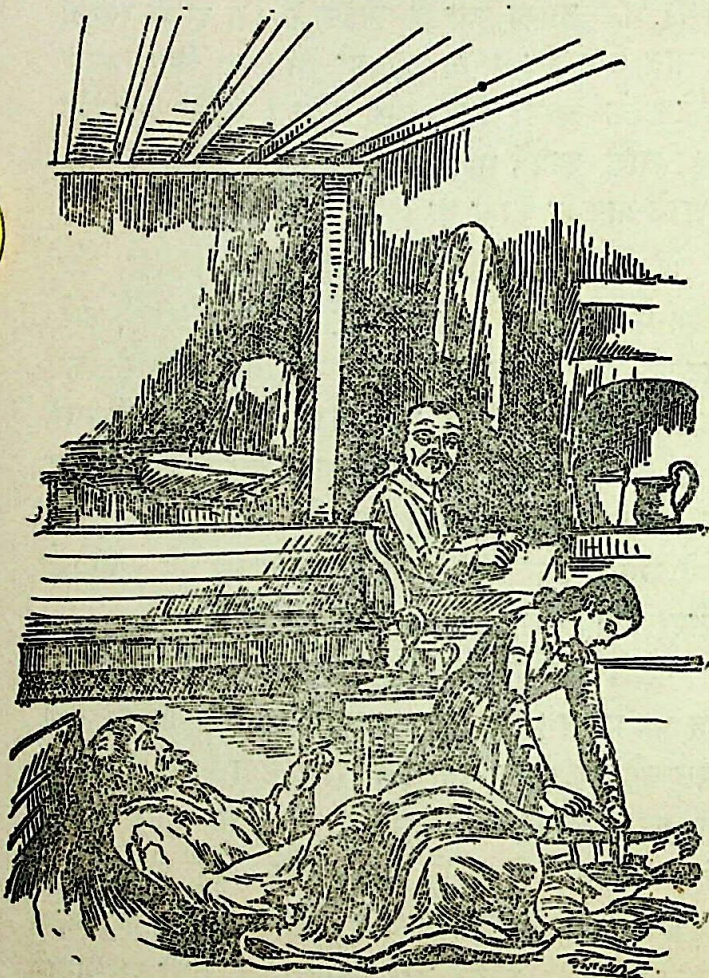
एक दिन बूढ़ा एक छोटी-सी संदूकची लेकर आया और 'मे' से कहने लगा—'बेटी ! तेरी सेवा-सहायतासे मैं नीरोग हो गया हूँ। अब मैं अपने घर जाऊँगा। यह संदूकची मैं तुझे देनेके लिये ले आया हूँ। तू इसे ले।'

बूढ़ेने संदूकची खोली और उसमेंसे बहुत मूल्यवान् गहने निकालकर दिखाये। 'मे' को बड़ा आश्चर्य हुआ; क्योंकि वह तो बूढ़ेको बहुत गरीब समझती थी। परंतु गहनोंको देखकर 'मे' लालचमें नहीं पड़ी। उसने कहा—'मैंने और मेरे पिताने अपने कर्तव्यका पालन किया है। रोगी और दुखी मनुष्यकी सेवा करनी तो हमारा कर्तव्य ही था। मैं आपके गहने नहीं लूँगी।'

वह बूढ़ा उस दिन वहाँसे चुपचाप चला गया, किंतु जब वह मरा तो उसने अपनी सारी सम्पत्ति 'मे'के नाम लिख दी थी। उसके कोई संतान नहीं थी। 'मे'को इस बातका बहुत पीछे पता लगा कि बूढ़े मनुष्यने उसे सहसा धनवान् बना दिया है।

# गरीब लँगड़े लड़केकी दयालुता

एक गृहस्थ एक गाँवके समीप अपनी घोड़ागाड़ी धीरे-धीरे हाँकते हुए आसपासमें कोई जलाशय खोज रहा था; क्योंकि उसके घोड़े बहुत ही थके और प्यासे थे। इतनेमें एक छोटी झोंपड़ी दीख पड़ी। उसके आँगनमें एक दस-बारह वर्षका लड़का बैठा था। दूरसे घोड़ोंको थके और प्यासे देखकर तुरंत ही वह लड़का झोंपड़ीमें जाकर पानीसे भरा हुआ एक डोल लाया और गाड़ी आनेके पहले ही सड़कपर जाकर खड़ा हो गया। उस गृहस्थने उसे देखकर गाड़ी खड़ी कर दी और उस लड़केसे पूछा—'लड़के! तू क्या चाहता है?' लड़केने कहा—'मैं कुछ नहीं चाहता, मैं तो तुम्हारे घोड़ोंको पानी पिलाने आया हूँ।' इतना कहकर उसने अपने हाथके डोलको घोड़ोंके सामने रख दिया। घोड़े पानी पीकर तृप्त हो गये।
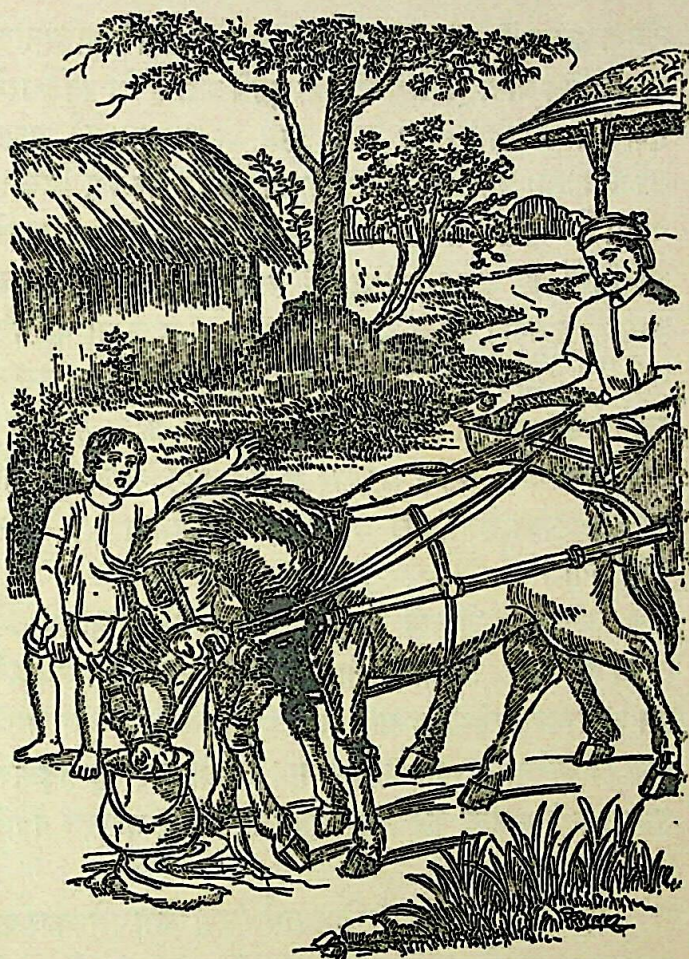
उसके बाद उस गृहस्थने अपने पाकेटमेंसे चाँदीके सिक्के निकाले और उस लड़केको देना चाहा । लड़का बोला—'महाशय ! मैं पैसेके लिये पानी नहीं लाया । मैं गरीब

लँगड़ा लड़का हूँ, मेरी माँ खेतके काम करती है, उससे हम दोनोंको भोजन मिल जाता है। मेरी माँने ही मुझसे कहा है कि जब ईश्वरने मुझे ऐसी स्थितिमें डाला है तो इसमें भी उनका कोई अच्छा उद्देश्य होगा; क्योंकि ईश्वर जो करता है, वह अच्छेके लिये ही करता है। तू अधिक चल नहीं सकता है; तो यहीं रहकर प्यासे आदमियों और जानवरोंको पानी पिलाया कर, इससे भी ईश्वरका काम हो सकेगा। यहाँसे आठ मीलतक पानीका झरना या गाँव नहीं है। इसलिये अपने इस कुएँमेंसे पानी निकालकर उसका सदुपयोग करना ठीक होगा। अपनी माँका यह कहना मुझे बहुत ठीक लगा और उसीके अनुसार मैं यह काम करता हूँ। और इसको ईश्वरका काम और अपना कर्तव्य समझता हूँ। मैं पैसा नहीं लेता।'

उस गृहस्थने जब लड़केके मुखकी ओर देखा तो उसे उसमें परोपकार और धार्मिकताका तेज दिखायी पड़ा। लड़केके इस सदाचारको देखकर वह बहुत ही प्रसन्न हुआ और मनमें ईश्वरकी महिमाका गान करने लगा। उसके बाद वह लड़केको उत्साहके कुछ शब्द कहकर और उसका उपकार मानकर वहाँसे चला गया।

एक अशक्त लड़का भी निःस्वार्थभावसे कैसा परोपकार कर सका, यह बात ठीक-ठीक उसकी समझमें आनेपर उसके मनके ऊपर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा और वह भी अच्छे-अच्छे परोपकारके काम करने लगा। परोपकारकी कितनी बड़ी महिमा है।

## गाड़ीवानको सहायता देनेवाला विद्यार्थी

एक विद्यार्थी गाँवके समीप स्कूलमें पढ़ने जा रहा था। उससे एक गाड़ीवानने कहा—'तुम इस गाड़ीको पीछेसे ढकेल दो तो मैं ऊपर पहुँच सकूँ।' पर 'स्कूलका समय हो गया है'—यों कहकर वह लड़का चला गया और स्कूल आकर खेलने लगा।

बेचारा गाड़ीवान कबसे बैठा-बैठा थक गया था और उसको भूख भी लगी थी; परंतु कोई आदमी उस रास्तेसे नहीं आ-जा रहा था। वह लड़का निकला तो वह भी चला गया। इससे 'अब क्या करूँ' यों कहकर वह रोने लगा। इतनेमें जान विल्सन नामका एक बहुत छोटी उम्रका विद्यार्थी उधरसे निकला। गाड़ीवानको रोते देखकर उसको दया आयी और उसके पास जाकर उसने कहा—'गाड़ीवान भाई! मत रोओ। मैं तुमको गाड़ी ऊपर चढ़ानेमें मदद करूँगा। चलो, खड़े हो जाओ।'

इतना सुनते ही वह गाड़ीवान उठकर आगे गया और उसने जुआ पकड़ा। पीछेसे विल्सन गाड़ीको ढकेलने लगा। इस
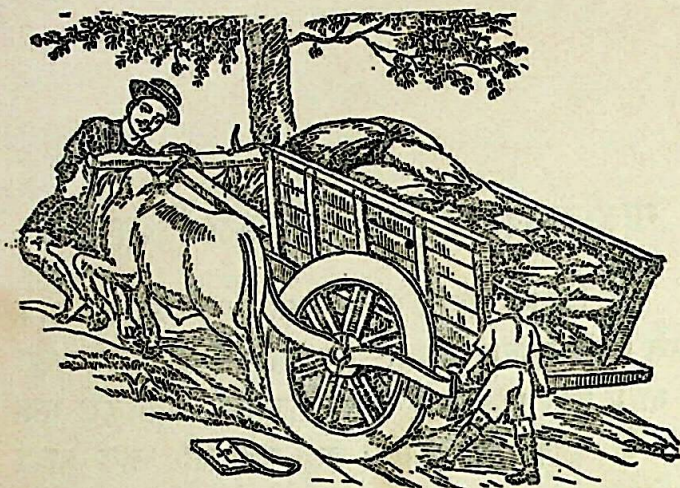
तरह गाड़ीको ऊपर पहुँचाकर वह अपनी स्लेट और पुस्तकें हाथमें लेकर स्कूलकी ओर जाने लगा। इतनेमें उसने गाड़ीपरके बोरेसे नीचे अनाज गिरते हुए देखा और गाड़ीवानसे कहा—'भाई ! गाड़ीको खड़ी करो। तुम्हारे बोरेसे अनाज नीचे गिर रहा है। उसे बंद करके गाड़ी हाँको।'

गाड़ीवानने गाड़ी खड़ी कर दी और छेद देखकर बोल उठा—'मैं तुम्हारा बड़ा ही आभारी हूँ। परमात्मा तुम्हारा भला करेगा। यदि तुमने यह बात मुझे न बतलायी होती तो मुझ गरीब आदमीका बहुत ही नुकसान हो जाता।' इसके बाद वह छोटा लड़का स्कूलकी ओर चला गया।

वह लड़का जब स्कूलमें पहुँचा तो घंटा बजकर दस मिनट हो गये थे। किसी भी दिन वह देर करके नहीं आता था, इससे गुरुजीने पूछा—'आज तुम्हें देर क्यों हुई ?' 'मैं आज

तुमको माफ करता हूँ।' इसके बाद दोपहरकी छुट्टी होनेपर सब लड़के खेलने लगे। खेलते-खेलते जिस लड़केने गाड़ीवानको मदद देनेसे इनकार किया था, उसने उस छोटे लड़केसे कहा—'तुम क्यों देरसे आये हो, यह मैं जानता हूँ। रास्तेमें बैठे हुए गाड़ीवानकी गाड़ी चढ़वानेमें देर लगी होगी और उसके लिये तुम्हें पैसे भी मिले होंगे। इसीसे गुरुजीको तुमने साफ नहीं बतलाया।'

लड़केने कहा—'मैंने पैसेके लिये गाड़ीवानकी सहायता नहीं की थी।' यह सुनकर वह लड़का बोला—'मैं तो पैसेके बिना कोई भी काम नहीं करता। मुझको भी उसने कहा था पर बदलेमें कुछ देनेके लिये नहीं कहा था। इसीसे मैंने इनकार कर दिया था। तू ही मूर्ख है कि जो उससे पैसे नहीं लिये।'

छोटे लड़केने कहा—'बेचारा गरीब गाड़ीवाला अपनी गाड़ी बढ़ा नहीं सकता था। उसकी मदद करना तो मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। मेरी सहायता माँ-बापने की है, इसीसे मैं बच सका हूँ। इसलिये मुझे भी दूसरोंकी सहायता करनी चाहिये।'

सारांश यह कि सेवाका बदला पैसेसे लेना तो व्यापार करनेके समान है। इसलिये बिना बदला लिये ही सेवा करनी चाहिये।

# परोपकारी बालक रामराव

बालक रामराव बंगलोरकी पंद्रहवीं बालचर सेनाका सदस्य था। उसकी अवस्था दस वर्षकी थी। एक दिन वह एक घाटपर खड़ा था। देवांग जातिकी पंद्रह वर्षकी एक कन्या वहाँ कपड़े धो रही थी। कपड़े धोते-धोते उस लड़कीका पैर फिसल गया और वह गहरे पानीमें पहुँचकर डुबकियाँ लेने लगी। बालक रामराव अपने सारे कपड़ोंके साथ जलमें कूद पड़ा। वह झटपट बालिकाके पास पहुँच गया।

रामरावने डूबती लड़कीको पकड़ लिया, परंतु उसका काम बहुत कठिन था। वहाँ पानीमें सिवार भरी थी, जो बार-बार हाथ-पैरमें फँस जाती थी। वह लड़की रामरावके लिये बहुत भारी थी। रामरावके कपड़े भीगकर तैरनेमें बाधा दे रहे थे। इतनेपर भी वह साहसी बालक अपने काममें जुटा रहा। वह उस लड़कीको घाटपर ले आया, यद्यपि
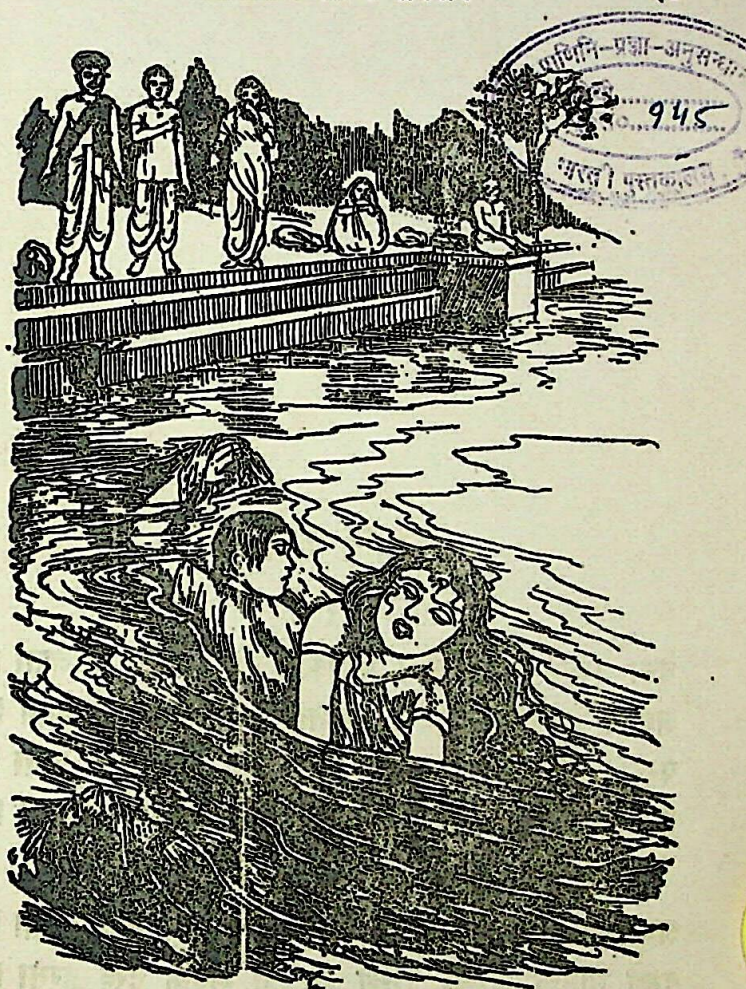
इस काममें वह स्वयं बहुत अधिक थक गया था और उसके भी डूब जानेका भय हो गया था। अपने प्राणोंको कठिनाईमें डालकर उसने उस कन्याके प्राण बचा लिये।

# दयालु कौन ?

( १ )

देख पराया दुःख, हृदय जिसका अति व्याकुल हो जाता।
जबतक दुःख न मिटता, तबतक नहीं चैन जो है पाता॥
परदुख हरनेको जो सुखसे निज सुख देकर सुख पाता।
करुणा-सागरका सेवक वह, दयालु जगमें कहलाता॥

( २ )

शत्रु-मित्र निज-परमें कोई भी जो भेद नहीं करता।
दुखी मात्रके दुखसे दुःखी हो, जो सबके दुख हरता॥
तन-मन-धन—सबकी बलि देनेमें जो तनिक नहीं डरता।
दयालु वह जो पर-रक्षणमें हँसते-हँसते है मरता॥